श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

अगस्त - द्वितीय, अंक - 22 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address Here

शिव संदेश

ध्यान की पृष्ठभूमि

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

ध्यान एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। प्रस्तुत शब्द का अपना मूल्य और महत्त्व है। यह शब्द एक बिन्दु रूप है जिसमें अर्थसिन्धु समाया हुआ है। ध्यान यथार्थ अर्थ में विकीर्ण शक्तियों का केन्द्रीकरण है और ये शक्तियां आत्मकेन्द्र की दिशा की ओर अभिमुख हैं। ध्यान अर्थात् भीतर का मौन। आचार्य अमित गति ने कहा है-

आनंद-रूपं परमात्मतत्वं, समस्त-संकल्पविकल्प-मुक्तम् ।
स्वभावलीना निवसन्ति नित्यं, जानाति योगी स्वयमेव तत्वम् ।।

इस प्रकार जहां संकल्प नहीं, विकल्प नहीं उस शान्त और मौन अवस्था का नाम है ध्यान। सहज स्वाभाविक श्वासोच्छवास के साथ सोऽहं की ध्वनि को देखते हुए विचार-शान्त होने लगते हैं। इस प्रकार जब सम्पूर्ण विचार शान्त हो जाएं और चित्त निर्विचार/मौन हो जाए उस अवस्था का नाम है ध्यान ।

ध्यान और नींद में कुछ समानताएं हैं। जैसे गहरी नींद में चित्त शान्त हो जाता है। तभी तो वह गहरी नींद कहलाती है अन्यथा सपनों का उसी प्रकार जब चित्त निर्विकार और शान्त हो आवागमन चालू रहता है। जाए तब ध्यान घटित होता है।

ध्यान और नींद में क्या अंतर है ? - गहरी नींद में भी चित्त निर्विचार और शान्त होता है लेकिन उस शांति के साथ बेहोशी है। ध्यान में चित्त शान्त होता है लेकिन उस शान्ति के साथ परिपूर्ण सजगता रहती है।

ध्यान और नींद में दूसरी समानता यह है कि दोनों को ही प्रयत्न पूर्वक, जबर्दस्ती, खींचकर लाया नहीं जा सकता है। दोनों ही एक अवस्था हैं जो स्वयमेव घटित होती हैं। आप जान बूझकर उनको ला नहीं सकते। हां, यह बात अवश्य है कि उनके घटित होने के लिए बाह्य एवं आन्तरिक पृष्ठभूमि तैयार करनी आवश्यक है। जैसे रात्रि को नींद आ जाए, इसके लिए आप किसी योग्य स्थान का चुनाव करते हैं। आराम से योग्य आसन बिछाकर लेट जाते हैं, सर्दी या गर्मी के अनुसार कुछ ओढ़ लेते हैं। लाइट मंद करते हैं या बंद कर लेते हैं और शरीर को ढीला छोड़ते हुए आंखें बंद करके लेट जाते हैं। उसके पश्चात् यदि अपने आप नींद आ गई तो आ गई। नहीं तो आप खींच-तानकर उसे ला नहीं सकते। नींद लाने के लिए जितने प्रयत्न करेंगे मन के द्वारा, उतना ही चित्त अशांत होगा और नींद नहीं आएगी।

लेकिन यदि चित्त को ढ़ीला छोड़ देते हैं तो नींद अपने आप कब आ जाती है उसका पता ही नहीं चलता। उसी प्रकार ध्यान के घटित होने के लिए हम बाह्य एवं आन्तरिक पृष्ठ भूमिका तैयार करते हैं। (शेष पृष्ठ 3 में)

अध्यक्षीय

गुरु-प्रेरणा से राष्ट्र आराधना तक
अहिंसा, सेवा, संस्कार और राष्ट्रीय कर्तव्य का संकल्प

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

समय के कुछ प्रसंग केवल तिथियाँ नहीं होते, वे समाज को अपनी विरासत का स्मरण कराने और भविष्य के लिए नया संकल्प लेने का अवसर प्रदान करते हैं। राष्ट्रसंत, श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज साहब की 127वीं जन्म जयन्ती और हमारे राष्ट्र का 80वाँ स्वतंत्रता दिवस ऐसे ही दो प्रेरणादायी प्रसंग हैं। एक हमें त्याग, तप, संयम और मानव-सेवा की आध्यात्मिक चेतना से जोड़ता है, तो दूसरा राष्ट्र के प्रति हमारे कर्तव्य, उत्तरदायित्व और समर्पण का बोध कराता है।

पूज्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज साहब का जीवन श्रमण संस्कृति के आदर्शों की सजीव अभिव्यक्ति था। उनकी साधना में आत्मकल्याण था तो दृष्टि में लोककल्याणय वाणी में धर्म था तो व्यवहार में करुणा, जीवन में संयम था तो हृदय में प्रत्येक प्राणी के प्रति संवेदना। उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि धर्म केवल आराधना का विषय नहीं, बल्कि मनुष्य के चरित्र, व्यवहार और सेवा में प्रकट होने वाली शक्ति है। श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव वर्ष के इस ऐतिहासिक कालखंड में उनकी जन्म जयन्ती हमें अपनी गौरवशाली आचार्य परम्परा के प्रति कृतज्ञ होने के साथ यह चिंतन करने का भी अवसर देती है कि हम उस विरासत को नई पीढ़ी तक किस स्वरूप में पहुँचा रहे हैं।

इसी भावभूमि में 15 अगस्त का 80वाँ स्वतंत्रता दिवस हमें स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता केवल प्राप्त अधिकार नहीं, बल्कि एक महान उत्तरदायित्व भी है। राष्ट्र की उन्नति केवल शासन अथवा संस्थाओं से नहीं होती, उसका निर्माण प्रत्येक नागरिक के चरित्र, अनुशासन, ईमानदारी, संवेदनशीलता और कर्तव्यनिष्ठा से होता है। आज जब हम इन दोनों पावन प्रसंगों को एक साथ देखते हैं तो एक अत्यंत प्रेरक सूत्र हमारे सामने आता है व्यक्ति में संयम, समाज में समरसता और राष्ट्र के प्रति समर्पण।

जैन कॉन्फ्रेंस का यह प्रयास है कि श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव केवल आयोजनों की श्रृंखला बनकर न रहे, बल्कि धर्म, सेवा, संस्कार, शिक्षा, युवा जागरण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक उत्तरदायित्व और संघीय एकता का राष्ट्रीय अभियान बने। हमारी गौरवशाली विरासत भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बने, समाज की संगठित शक्ति मानवता की सेवा में लगे, यही अमृत महामहोत्सव की सार्थकता होगी।

पूज्य गुरुदेव के चरणों में कोटिशः वंदन। उनकी तपःपूत जीवन-यात्रा हम सभी को सेवा, संयम और सदाचार के मार्ग पर निरंतर प्रेरित करती रहे। समस्त समाजजनों एवं देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक मंगलकामनाएँ।

सम्पादकीय

नारे नहीं, संस्कार चाहिए : लोहगढ़ से उठती चेतावनी और चातुर्मास का राष्ट्रीय दायित्व!

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

लोहगढ़ की घटना केवल एक आपराधिक प्रकरण नहीं है, यह भारतीय समाज के अंतःमन को झकझोर देने वाली चेतावनी है। प्रारंभिक जाँच के अनुसार यह मामला एक युवती द्वारा अपने मंगेतर की हत्या की कथित साजिश से जुड़ा बताया जा रहा है। न्यायिक प्रक्रिया अपना कार्य करेगी और अंतिम निर्णय न्यायालय देगा, किंतु समाज का दायित्व केवल अपराधी की प्रतीक्षा करना नहीं, बल्कि अपराध के सामाजिक कारणों पर विचार करना भी है।

बीते कुछ वर्षों में ऐसी घटनाओं की संख्या चिंताजनक रूप से चर्चा में रही है। मेरठ के चर्चित सौरभ राजपूत हत्याकांड में पत्नी पर अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या कर शव को ड्रम में छिपाने का आरोप लगा। दिल्ली के पांडव नगर हत्याकांड में भी पत्नी और उसके सहयोगी पर पति की हत्या कर शव के टुकड़े करने का आरोप लगा। देश के विभिन्न भागों से समय-समय पर वैवाहिक विश्वासघात, विवाहेतर संबंधों और पारिवारिक विघटन से जुड़े ऐसे अनेक मामले सामने आए हैं। साथ ही, महिलाओं के विरुद्ध होने वाले जघन्य अपराध भी समाज की एक कटु सच्चाई हैं। इसलिए यह स्त्री या पुरुष का प्रश्न नहीं, बल्कि मनुष्य के चरित्र, परिवार और संस्कारों के संकट का प्रश्न है।

आज "महिला सशक्तीकरण", "अधिकार", "स्वतंत्रता" और "आधुनिकता" जैसे शब्द सार्वजनिक विमर्श के केंद्र में हैं। इन आदर्शों का अपना महत्व है, किंतु यदि सशक्तिकरण का अर्थ केवल अधिकार रह जाए और उसके साथ उत्तरदायित्व, आत्मसंयम, नैतिकता तथा परिवार के प्रति संवेदनशीलता न जुड़ी हो, तो समाज संतुलन खो देता है। यही बात पुरुषों पर भी समान रूप से लागू होती है। अधिकार और कर्तव्य एक-दूसरे के पूरक हैं इनमें से किसी एक की उपेक्षा समाज को विघटन की ओर ले जाती है।

भारतीय सभ्यता की आत्मा परिवार है। परिवार केवल रक्त-संबंध नहीं, बल्कि विश्वास, संवाद, त्याग और संस्कार की सतत चलने वाली पाठशाला है। आज सबसे बड़ी चिंता यह नहीं कि परिवार छोटे हो गए हैं चिंता यह है कि परिवारों के भीतर संवाद छोटा हो गया है। माता-पिता और संतानों के बीच विश्वास का सेतु कमजोर हुआ है। मोबाइल और सोशल मीडिया ने संपर्क तो बढ़ाया है, किंतु संवाद घटा दिया है। परिणामस्वरूप जीवन के सबसे महत्वपूर्ण निर्णय कई बार परिवार से छिपकर, क्षणिक आकर्षण या भावनात्मक आवेग में लिए जा रहे हैं। (शेष पृष्ठ 5 में)

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर मामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'

परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.

परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.

परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.

परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.

परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'

परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा

परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.

परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.

परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.

परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)

परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'

परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.

परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.

परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.

परम श्रद्धेय डॉ. श्री रामुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.

परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.

परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील वाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

स्वतंत्रता : अधिकार एवं जिम्मेदारी

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

अधीन होकर बुरा है जीना, है मरना अच्छा स्वतंत्र होकर ।
सरल को तजकर गरल का प्याला है पीना अच्छा स्वतंत्र होकर ।।

हमने ये पंक्तियाँ बचपन में पड़ी थी, सीखी थी, गुनगुनाई थी। इन्हें गाते समय भी भीतर में, एक आत्म सम्मान की हल्की सी अनुभूति होती थी। स्वतंत्र शब्द ही अपने आपमें व्यक्ति की सत्ता का सम्मान करने वाला है। शक्ति, संपन्न समर्थ ही हो सकता है। शक्ति का सम्मान स्वाभाविक होता है। स्वतंत्र शब्द अपने होने का, अपने बनने का, अपनी जिम्मेदारी का, अपनी संभावनाओं को खुलकर प्रकट करने का एक माध्यम है, एक सूत्र है।

15 अगस्त को सम्पूर्ण भारतवर्ष स्वतंत्रता का उत्सव, आजादी का जश्न मनाने के लिए उत्सुक रहता है। यह वो क्षण है जिसे देखने, पाने के लिए हजारों भारतीयों ने अपने घर-परिवार व्यवसाय की परवाह न करके एक लक्ष्य बनाया और हासिल किया। उम्र, प्रतिष्ठा, व्यवसाय, नौकरी, जाति, वर्ण, पंथ, धर्म का भेदभाव मिटाकर सभी राष्ट्रप्रेमियों के लिए हुए संकल्प की किए गए निःस्वार्थ यज्ञ की सम्पन्नता का अवसर था 15 अगस्त।

15 अगस्त 1947 के दिन भारत देश राजनितिक रूप से स्वतंत्र बना, बरसों तक प्रशासन का नेतृत्व करनेवाली पाश्चात्य सत्ता ने अपना अधिकार पूर्ण रूप से भारतीय जनता को, नेतृत्व को सौंप दिया। उस दिन शायद भारतीयों ने अनेकों स्वप्न संजोये होंगे। अनेक संकल्प उस पावन दिवस पर हुए होंगे क्योंकि बरसों के प्रयासों ने सफलता के शिखर को छुआ था। क्या स्वप्न होंगे और क्या संकल्प होंगे? यह तो दशको पूर्व की बात है। हम सिर्फ अनुमान ही कर सकते है। तथापि एक बात निश्चित है कि अपने हाथों अपना भविष्य अधिक बेहतर हो यह भावना तो प्रत्येक मानव मात्र की होती है। शायद इसी तरह बेहतर भारत की संकल्पना सभी के मन में रही होगी।

मानसिक, वैचारिक स्वतंत्रता यह व्यक्ति के अध्ययन, परिवेश, संस्कार का विषय है। आज सोशल मीडिया के व्यापक प्रभाव तथा विजुअल मीडिया ने मानव मन, मस्तिष्क पर एक तरह से कब्जा जमा लिया है। विज्ञान, तकनीक की गुलामी का यह दौर चल रहा है। वाहनों ने अच्छे स्वस्थ मानव को पंगु बना दिया है। कैल्क्युलेटर और कम्प्यूटर ने मानव मस्तिष्क की स्वाभाविक गणनशक्ति, चिंतनशक्ति को प्रभावित किया है। सेलफोन जैसे साधनों ने व्यक्ति के स्वाभाविक प्रत्यक्ष संवाद शक्ति को कमजोर बना दिया है। यही कारण है कि आज अपने मन, मस्तिष्क का विचार, चिंतनशक्ति के स्वतंत्रता पर, स्वतंत्र अस्तित्व पर आधुनिकता का खतरा मंडरा रहा है।

भौतिकता की आंधी में आध्यात्मिक स्वतंत्रता तो प्रायः दुर्लक्षित ही है। धन की, साधन की अंधी दौड़ और अतृप्ति में मानव अपनी आध्यात्मिकता को भूल रहा है। जिसके बिना भौतिक जगत का अस्तित्व, महत्व शून्य है वह है आध्यात्मिक सत्ता स्वतंत्र आध्यात्मिक स्वतंत्रता से ही अन्य स्वतंत्रताएँ अर्थवती हैं। आध्यात्मिक अधिष्ठान में अन्य स्वतंत्रताएँ सकारात्मक तथा सर्वांगीण विकास रूप बनती हैं। इससे विपरीत स्थिति में स्वतंत्रता स्वच्छंदता में परिवर्तित होने की संभावना अधिक होती है। परतंत्रता हमारे विकास को अवरुद्ध करती है, स्वच्छन्दता विकृति को पनपाती है। ऐसी स्थिति में स्वतंत्रता को सही अर्थ में समझना, अपनाना, जीना यही मानव मात्र के लिए हितावह, कल्याणप्रद है। स्वाधीनता दिवस पर हम सर्वांगीण स्वतंत्रता को पाने, सुरक्षित रखने के पुरुषार्थ हेतु कृत संकल्प बनें।

इस झण्डे को छूने तक का भी, हमको अधिकार नहीं है !

- श्रमण संघीय महामंत्री
श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद'

इस झण्डे को छूने तक का भी, हमको अधिकार नहीं है।
क्योंकि हम में भारत के प्रति, अणु जितना भी प्यार नहीं है।।
हमें प्यार है अपने स्वार्थों को, सार्थकता दिलवाने का।
हमें प्यार है डण्डे के बल, अपनी बातें मनवाने का।।
हमें प्यार है अपने हित में, साम्प्रदायिकता भड़काने का।
हमें प्यार है जुड़े हुए दिल, टुकड़े-टुकड़े करवाने का।।
तोड़ फोड़ दंगे करवा दें, हमको तनिक विचार नहीं है।
क्योंकि हम में भारत के प्रति, अणु जितना भी प्यार नहीं है।।
वेतन पूरा ले लेंगे, पर ड्यूटी की परवाह नहीं है।
कस कर पूरी रिश्वत लेंगे, किन्तु मन में आह नहीं है।।
रद्दी माल मिलाकर देंगे, जनहित की कुछ चाह नहीं है।
अमृत बता जहर दे देंगे, किन्तु दिल में दाह नहीं है।
सच्चा भी झूठा बन जाए, देने को कलदार नहीं है।।
क्योंकि हम में भारत के प्रति, अणु जितना भी प्यार नहीं है।।
जिस झण्डे को उन्नत रखने, वीरों ने बलिदान दिया है।
गोली की बौछारों में भी, जिस झण्डे को मान दिया है।।
भरी जवानी के अरमानों, को जलता श्मशान दिया है।
हँसते-हँसते झूल गये पर, मर कर भी ध्वज गान दिया है।।
वे ही हैं इसके अधिकारी, हम तो कुछ हकदार नहीं है।
क्योंकि हम में भारत के प्रति, अणु जितना भी प्यार नहीं है।।
आजादी का यह महोत्सव, हमको कुछ कहने आया है।
भटक गये हैं मूल मार्ग से, सन्मार्गी करने आया है।।
स्वार्थीपन जो भी फैला है, उसको यह हरने आया है।
खूट चुका है प्यार हृदय से, उसको फिर भरने आया है।।
स्वर पहचानें, "कुमुद" आज का, क्योंकि इसका सार यही है।
क्योंकि हम में भारत के प्रति, अणु जितना भी प्यार नहीं है।।

भगत सिंह की क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र रहा 'अमर जैन हॉस्टल, लाहौर'

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

पंजाब स्थानकवासी जैन परम्परा के आद्य आचार्य पूज्य प्रवर श्री अमरसिंहजी महाराज की पुष्य स्मृति में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन महासभा, पंजाब द्वारा अविभाजित भारत के महानगर लाहौर में सन् 1916 में 'श्री अमर जैन हॉस्टल' की स्थापना की गई। जिसका उद्देश्य था उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले जैन युवकों को शुद्ध आहार एवं स्थान की सुविधा प्राप्त हो। अमर जैन हॉस्टल उस समय पंजाब का एकमात्र जैन समाज के द्वारा संवालित उच्च स्तरीय सुविधा युक्त हॉस्टल था, उसमें सम्पूर्ण देश से लाहौर में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आने वाले जैन नवयुवक रहा करते थे।

उन्हीं में एक नवयुवक थे श्री धन्वंतरी जैन, वह छात्र तो थे ही परंतु आजादी आंदोलन में हिस्सेदारी और दखल रखने वाले क्रांतिकारी भी थे। उनके संबंध गुरुदत्त और सरदार भगत सिंह जैसे देश पर मर मिटने वाले बहुत सारे देशभक्त क्रांतिकारियों से थे। भगत सिंह और उनके साथियों द्वारा दिल्ली में असेंबली बम ब्लास्ट की योजना बनाई जा रही थी तो उसका ज्यादातर ताना-बाना अमर जैन हॉस्टल में ही बुना गया। सियालकोट निवासी लाला अमरदासजी जैन एडवोकेट के द्वारा सरदार भगत सिंह को अंग्रेजी हुकूमत द्वारा गिरफ्तार करने के बाद उनके पिता सरदार किशन सिंह जी के निवेदन पर वह मुकदमा अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध भगतसिंह की ओर से लड़ा गया, जिसमें लाहौर के मशहूर एडवोकेट लाला मूलचंद जी जैन भी शामिल रहे।

उसी मुकदमे में भगतसिंह के एक पक्षकार सियालकोट निवासी लाल नगीनालाल जैन अपने संस्मरण में लिखते हैं कि वे भी अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान अमर जैन हॉस्टल में श्री धन्वंतरी जी जैन के साथ रहे। उन्होंने स्वयं ने देखा कि श्री धन्वंतरी जो कि लाहौर साजिश केस में मुजरिम करार दिए गए, उनके पास अक्सर कुछ कांतिकारी जवान लड़के आया करते थे, जिनके साथ वे अंदर से दरवाजा बंद करके रखते थे। रात को सब क्रांतिकारी खुशी मोहम्मद नाजिरी की लिखित कविता 'जोगी' अपने नारे बाजे के साथ गाकर सुनाया करते थे। उस समय कोई यह ख्याल भी नहीं कर सकता था कि वह क्रांतिकारी भगतसिंह और उनके साथी हैं। लाला नगीनालाल जैन ने अपने संस्मरण में स्पष्ट लिखा है कि श्री अमर जैन हॉस्पिटल उस समय के क्रांतिकारियों रहने, बैठक करने और अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह करने की योजनाएं बनाने का एक अहम् स्थान था, जहां से देश के आजाद होने का मार्ग प्रशस्त हुआ। देश के आजाद होने एवं देश विभाजन के बाद अमर जैन हॉस्टल चण्डीगढ़ के सेक्टर 27 में स्थानकवासी जैन समाज पंजाब द्वारा स्थापित कर दिया गया है।

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

सूर्यावतार महाराणा

मेवाड़ की घाटियों में सूरज, उगते-उगते उगता था। बांस भर दिन चढ़ आता आकाश में तब सूरज भगवान के दर्शन होते। सूर्यव्रती लोग सूर्य का दर्शन होने पर ही अन्न-जल ग्रहण करते थे। 'पहले सूर्य पूजा फिर काम दूजा' यह मान्यता थी-सूर्यव्रती लोगों की। एक बार सात दिन तक घनघोर वर्षा होती रही। अतः सूर्यव्रतियों ने सात दिन भूखे रह कर बिता दिए। आठवें दिन भी सूरज के दर्शन नहीं हुए तो एक वृद्ध पुरुष ने कहा-सभी लोग एक स्थान पर आ जाओ। आज सूर्य नारायण के दर्शन होंगे। भूखी जनता आध घड़ी में जमा हो गई। वृद्ध पुरुष ने कहा-राजा राजसिंह सूरज के ही तो अंशावतार हैं! उनके दर्शन कर लें और व्रत खोल लें।

प्रजा राजमहल के बाहर जमा हो गई तो महाराणा सोच में पड़ गए कि क्या बात है, प्रजा क्या फरियाद ले आई है। महाराणा महल से उतर कर नीचे आये तो वृद्ध पुरुष ने कहा-''महाराजा! सात दिन से सूर्य नारायण के दर्शन नहीं हुए हैं। सो प्रजा आपके दर्शन करने आई है। अब प्रजा अपना व्रत खोल सकेगी। आप सुख से महलों में पधारिए।''

राजसिंह की माँ भी राजा के साथ-साथ महल से नीचे आई थी। पुत्र का प्रजा द्वारा इतना मान होते देखकर खुशी के आँसू भर लाई! महल में पहुँचते ही पुत्र राजसिंह को छाती से लगा लिया। बोली बेटा! आज मैं निहाल हो गई। राजा हो तो ऐसा। प्रजा तुझे कितना मान देती है। आज मेरी कोख सफल हो गई।' ''माँ, तुम मुझे जन्म देकर सफल हो गई; कह रही हो? पर मुझ से तो आज एक पाप हो गया। उसे सोच कर मेरा मन दुःखी हो रहा है।'' क्यों बेटा! ऐसा क्या हो गया तुझसे? मुझे बताओ मैं उसका प्रतिकार करूंगी।

माँ आज प्रजा तो दर्शन करने आई थी। उनमें नगर सेठ का परिवार भी था। नगर सेठ की पुत्रवधू को देख मेरी आँखों में विकार आ गया। अब आप ही बताओ कितना बड़ा पाप कर लिया मैंने! हाँ, बेटा! है तो यह पाप ही। अपनी बहू-बेटियों को देख कर विकार जाग जाए, इससे बड़ा तो कोई पाप नहीं है, पर आ, मेरे कमरे में आ। इस दोष-दृष्टि का भी इलाज है। मेरे साथ-साथ चला आ।

माँ, महाराणा राजसिंह को अपने कमरे में ले गई और सिल पर नमक पीसने लगी। इतने में एक दासी आ गई। बोली-राजमाता क्या कर रही हो? दासियों की कमी है क्या राणा साहब के राज में? लाओ मैं पीसती हूँ। क्या पीस रही हो?

कुछ नहीं, बेटे को नजर लग गई है। जरा नमक पीस रही थी। अब तो पीस लिया। जा सोने की कटोरी ले आ। दासी सोने की कटोरी ले आई। माँ ने पानी और नमक मिला लिया। दासी पूछ बैठी-आप इसका क्या करोगी? बेटे की आँख धोनी हैं। क्यों?

आज मेरे बेटे की आँख में वासना जाग आई थी। इससे धो दूँगी। पवित्र हो जाएंगी आँखें! माँ जी! इससे तो राणा साहब को भारी वेदना होगी? होगी! जरूर होगी! जैसा रोग हो इलाज भी तो वैसा ही करना पड़ता है। मैं उसकी वेदना देखूँ या उसकी निरोगता देखूँ? प्रजा तो राजा के लिए बेटा-बेटी के समान होती है। राजसिंह ने आज नगर की एक बहू को विकार-भरी निगाह से देखा था।'

राजमाता यह, सब कहती जा रही थीं और पुत्र राजसिंह की ओर बढ़ती जा रही थी। पुत्र से बोली-आ बेटा तेरी आँख धो दूँ थोड़ी देर की बात है। सारा विकार धुल जाएगा। माँ का इतना कहना था कि राजसिंह राजमाता की गोद में सिर रख कर ऐसे लेट गए जैसे अबोध बालका नमक के पानी से आँख धो कर मां ने कहा-जा बेटा अब तेरे मन में कभी विकार न आयेगा। सारा पाप हमेशा के लिए खत्म हो गया।

शेरे राजस्थान, अहिंसा दिवाकर वरिष्ठ प्रवर्तक पूज्य श्री रूपचंद जी म. 'रजत' के 98वें जन्मोत्सव प्रसंग पर विशेष...

संत का संकल्प, गौसेवा की विराट प्रेरणा

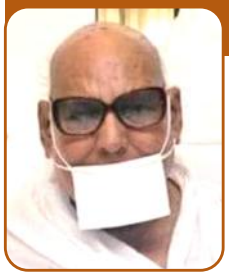

- युवा तपस्वी श्री मुकेशमुनि जी म.सा.

वीरों की भूमि राजस्थान की गौरवशाली संत परंपरा में अहिंसा, जीवदया और गौसेवा की प्रेरणा को जन-जन तक पहुँचाने वाले अहिंसा दिवाकर, शेरे राजस्थान, लोकमान्य संत वरिष्ठ प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री रूपचंद जी म.सा. 'रजत' का 98वाँ जन्मोत्सव श्रद्धा, भक्ति और सेवा का प्रेरक प्रसंग है। शताब्दी वर्ष की ओर अग्रसर पूज्य गुरुदेव का जीवन अहिंसा, जीवदया, गौसेवा और सामाजिक जागरण की एक ऐसी प्रेरणादायी यात्रा है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए भी मार्गदर्शक बनी रहेगी।

पूज्य गुरुदेव की गौसेवा यात्रा का विशेष संबंध उनके जीवनोद्धारक गुरुदेव श्रमण सूर्य, मरुधर केसरी परम पूज्य श्री मिश्रीमल जी महाराज की प्रेरणा से जुड़ा हुआ है। मरुधर केसरी जी म.सा. ने जैन संत के रूप में चंड़ावल, हरियाडा एवं जैतारण सहित अनेक क्षेत्रों में गौसेवा और गौशाला स्थापना की प्रेरणा दी, वरिष्ठ श्रावक एवं पत्रकारों के अनुसार, वे गौशाला की प्रेरणा देने वाले प्रथम जैन संतों में अग्रणी थे। पूज्य श्री रूपचंदजी महाराज ने अपने गुरु से प्राप्त इसी प्रेरणा को आत्मसात किया और इसे व्यापक जनअभियान का स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने गौसेवा को केवल धार्मिक भावना तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज और शासन दोनों को इससे जोड़ने का निरंतर प्रयास किया।

विधिवत् 1994 में शासन तक पहुँची गौवंश की पीड़ा, सन् 1994 के सादड़ी चातुर्मास में तत्कालीन राजस्थान मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह जी शेखावत पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ पधारे, इस अवसर पर गुरुदेव ने राजस्थान से गौवंश एवं बछड़ों को बाहर ले जाए जाने की चिंता मुख्यमंत्री जी के समक्ष रखी तथा गौवंश के संरक्षण के लिए प्रभावी कदम उठाने की प्रेरणा दी। गौवंश की पीड़ा को शासन तक पहुँचाने का यह प्रसंग अपने आप में महत्वपूर्ण था, इसी कालखंड में राजस्थान में गौवंश संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण कानूनी पहल हुई, राजस्थान गोवंशीय पशु वध प्रतिषेध एवं अस्थायी प्रव्रजन अथवा निर्यात विनियमन अधिनियम, 1995 बना और लागू हुआ, जिसमें गौवंश के वध तथा वध के उद्देश्य से राज्य से बाहर ले जाने पर रोक सहित कई महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए।

तत्पश्चात गौसंरक्षण एवं वित्तीय सहायता से संबंधित प्रावधानों को भी आगे बढ़ाया गया। संबंधित कानून एवं व्यवस्थाएँ राजस्थान सरकार के गौसेवा आयोग के रूप में 1997 राजपत्र में प्रकाशित हुईं और लागू की गई, इस प्रकार संतों की प्रेरणा और शासन की नीतिगत पहल के बीच गौसंरक्षण के लिए एक मजबूत वातावरण बनने लगा।

1997 में 107 गौशालाओं का संकल्प : सन् 1997 के जयपुर चातुर्मास में मरुधर केसरी परम पूज्य श्री मिश्रीमल जी महाराज की जन्म-जयंती के अवसर पर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह जी शेखावत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इसी अवसर पर पूज्य श्री रूपचंद जी महाराज ने 107 गौशालाएँ खोलने का संकल्प व्यक्त किया, यह संकल्प केवल एक संख्या का संकल्प नहीं था, बल्कि राजस्थान में गौसेवा को व्यापक स्तर पर आगे बढ़ाने का एक विराट सामाजिक आह्वान था। मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह जी शेखावत ने सरकारी भूमि एवं आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराने के लिए सरकार की ओर से हरसंभव प्रयास का आश्वासन दिया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सरकार ने आप सरीखे अनेक धर्म गुरुओं की प्रेरणा को आत्मसात करते हुए गौसेवा एवं गौसंरक्षण के संबंध में अनेक प्रावधान किए हैं तथा कुछ माह पूर्व गौ सेवा आयोग का गठन किया गया है। गौ सेवा आयोग को गौसेवा एवं गौसंरक्षण से संबंधित कार्यों के विकास, संवर्धन तथा इससे जुड़े विभिन्न विषयों पर व्यापक स्तर पर कार्य करने के अधिकार प्रदान किए गए, इससे गौसेवा के क्षेत्र में सरकारी व्यवस्था को भी संस्थागत आधार मिला।

गाँव-गाँव पहुँची गौसेवा की प्रेरणा, सरकारी व्यवस्था भी हुई मजबूत तथा उनकी अहिंसा, जीवदया और गौसेवा की प्रेरणा आने वाली पीढ़ियों को भी मार्गदर्शन देती रहे तथा राजस्थान की धरती पर जीवदया की यह ज्योति निरंतर प्रज्वलित रहे-इसी मंगलकामना के साथ उनके 98वें जन्मोत्सव पर श्रद्धापूर्वक वंदन!

(पृष्ठ 1 का शेष 'शिव संदेश') **बाह्य पृष्ठ भूमिका -** किसी योग्य स्थान पर, किसी योग्य आसन में आंखों को हल्के से बंद करते हुए, रीढ़ की हड्डी को सीधा रखते हुए, सम्पूर्ण शरीर को शिथिल छोड़कर, स्थिर होकर हम बैठ जाते हैं। यह बाह्य पृष्ठ भूमिका हुई।

आन्तरिक पृष्ठ भूमिका - आस-पास के वातावरण से ध्यान हटाकर हम अपना सम्पूर्ण चित्त सहज स्वाभाविक श्वासोच्छवास के साथ सोऽहं ध्वनि के साथ देखने में लगाते हैं। इस प्रकार सोऽहं की ध्वनि को देखते-देखते विचार स्वयमेव शान्त होने लगते हैं और जब विचार सम्पूर्ण रूप से शान्त हो जाते हैं तो ध्यान घटित होता है। हम विचारों को जबरदस्ती शान्त नहीं कर सकते। जितना हम विचारों को रोकने का यत्न करेंगे, उतने ही विचार बढ़ते चले जाएंगे। इस प्रकार ध्यान एक प्रयत्न नहीं है, अपितु एक घटना है। फिर भी उसके घटित होने के लिए पृष्ठ भूमिका तैयार करना आवश्यक है।

मौन अर्थात् चैतन्य - यह सम्पूर्ण विश्व चैतन्य का ही खेल है। समस्त विज्ञान, गणित, भाषा, कला, काव्य, संगीत एवं अध्यात्म प्रत्येक विधा का जन्म, प्रत्येक सृजन का स्रोत एवं निर्माण का मूल आन्तरिक मौन एवं शून्य है। मौन में प्रविष्ट होने के पश्चात् अनंत संभावनाओं का द्वार उघड़ता है। अतः जब व्यक्ति मौन में प्रवेश करता है तब उसका सर्वांगीण विकास होता है। उसके चैतन्य का विकास होता है।

(पृष्ठ 4 का शेष 'जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...')

आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में जैन अध्ययन के जो पाठ्यक्रम संचालित हैं, उनमें डॉ. जॉन ई. कॉर्ट के ग्रंथ अनिवार्य संदर्भ सामग्री के रूप में सम्मिलित हैं। उनके शोधों ने यह स्थापित किया कि जैन धर्म केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि समस्त मानवता के लिए शांति, सहिष्णुता और नैतिक जीवन का वैश्विक संदेश है। आधुनिक जैन अध्ययन को अंतर्राष्ट्रीय अकादमिक पहचान दिलाने वाले विद्वानों में उनका स्थान अत्यंत अग्रणी माना जाता है। आज भी उनके शोध, व्याख्यान और लेख विश्वभर के शोधार्थियों, इतिहासकारों और जैन अध्ययन के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

विदेशी विद्वानों की उस गौरवशाली परंपरा में, जिसने बिना किसी पूर्वाग्रह के भारतीय संस्कृति और जैन दर्शन को समझने तथा विश्व समुदाय तक पहुँचाने का कार्य किया, डॉ. जॉन ई. कॉर्ट का योगदान निस्संदेह स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जाएगा। उन्होंने सिद्ध किया कि जैन धर्म केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की मानव सभ्यता के लिए भी उतना ही प्रासंगिक जीवन-दर्शन है। उनके अनुसंधानों ने जैन धर्म की वैश्विक प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए जैन अध्ययन का एक सुदृढ़ बौद्धिक आधार निर्मित किया है। यही उनकी सबसे बड़ी विद्वत् उपलब्धि और जैन समाज के प्रति उनका अविस्मरणीय योगदान है।

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 28

गहरी श्वास और भय का क्षय

(गहन विस्तार)

भय मन का सबसे प्राचीन भाव है। अहंकार की जड़ में भय है। कर्ताभाव के पीछे भय है। नियंत्रण की जिद के पीछे भी भय है। जब तक भय को समझा और नरम न किया जाए, प्रमाद की जड़ जीवित रहती है। और भय को सीधे बुद्धि से नहीं मिटाया जा सकता। पर श्वास उसके पास पहुँच सकती है।

1. भय की जैविक प्रकृति : जब भय सक्रिय होता है, तो शरीर तुरंत सतर्क हो जाता है। हृदय तेज धड़कता है। श्वास छोटी और तेज हो जाती है। नाभि कस जाती है। मांसपेशियाँ सख्त हो जाती हैं। यह सब Survival के लिए बना तंत्र है। परंतु जब मानसिक भय लगातार सक्रिय रहे, तो शरीर विश्राम भूल जाता है।

2. भय और श्वास का संबंध : भय का पहला संकेत है-उथली श्वास। यदि आप किसी भी क्षण अपनी श्वास को देखें, तो समझ सकते हैं कि भीतर शांति है या तनाव। इसलिए श्वास भय की सीधी खिड़की है।

3. गहरी श्वास का प्रभाव : जब व्यक्ति धीरे-धीरे गहरी श्वास लेता है और उसे पेट तक जाने देता है, तो शरीर को संकेत मिलता है-"मैं सुरक्षित हूँ।" यह संकेत बार-बार देने से भय की तीव्रता कम हो सकती है।

4. भय को बदलना नहीं, देखना : गहरी श्वास लेते समय भय को हटाने की कोशिश न करें। पहले उसे पहचानें। "हाँ, अभी भय है।" "अभी मैं असुरक्षित हूँ।" फिर श्वास को धीरे-धीरे गहरा करें। स्वीकृति + श्वास भय को नरम करती है।

5. श्वास और अस्तित्व-भरोसा : जब श्वास नाभि तक जाती है, तो शरीर को स्थिरता का अनुभव होता है। यह अनुभव धीरे-धीरे भीतर भरोसा उत्पन्न करता है। भरोसा बौद्धिक नहीं होता। वह शारीरिक अनुभव से जन्म लेता है।

6. दीर्घकालीन भय : कभी भय तीव्र नहीं होता, पर पृष्ठभूमि में रहता है। हल्की चिंता अदृश्य असुरक्षा निरंतर सतर्कता ऐसे में भी श्वास का अभ्यास धीरे-धीरे आधार बदल सकता है।

7. भय और नियंत्रण : जब भय होता है, तो मन नियंत्रण चाहता है। यदि श्वास से भय नरम हो जाए, तो नियंत्रण की जिद भी कम हो सकती है। यहीं से कर्ताभाव ढीला पड़ता है।

8. अभ्यास-भय के क्षण में : जब अचानक तनाव आए-रुकें। आँखें बंद करें (यदि संभव हो)। 4 गिनती में श्वास लें। 6 या 8 गिनती में छोड़ें। पेट को फैलते-सिकुड़ते देखें। तीन मिनट पर्याप्त हैं शरीर को संतुलन की दिशा में ले जाने के लिए।

9. भय से मैत्री : भय शत्रु नहीं है। वह सुरक्षा का प्रयास है। यदि हम उसे दबाते हैं, तो वह कठोर हो जाता है। यदि हम उसे सुनते हैं, तो वह नरम पड़ता है। श्वास भय के साथ मैत्री का माध्यम है।

10. अंतिम स्पष्टता : गहरी श्वास भय को तुरंत समाप्त नहीं करती। पर वह उसे कमजोर करती है। उसकी पकड़ ढीली करती है। जब भय नरम होता है, तो प्रमाद की जड़ हिलती है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-नाभि को अस्तित्व का गुरुत्व केंद्र क्यों कहा गया है। (क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

विश्व मंच पर जैन धर्म के प्रखर व्याख्याकार : डॉ. जॉन ई. कॉर्ट !

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

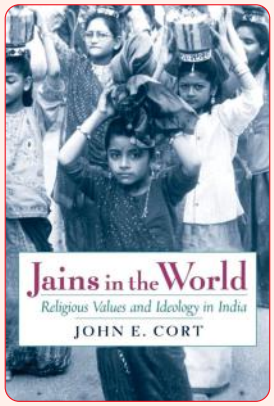

भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक इतिहास में जैन धर्म एक ऐसी महान परंपरा है, जिसने अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, सह-अस्तित्व और आत्मानुशासन जैसे सार्वभौमिक जीवन-मूल्यों के माध्यम से संपूर्ण मानवता को नई दिशा प्रदान की है। यद्यपि इन सिद्धांतों का प्रभाव प्राचीन काल से ही विश्व के अनेक देशों तक पहुँचा, किन्तु आधुनिक अकादमिक जगत में जैन धर्म को गंभीर अध्ययन का विषय बनाने वाले जिन विदेशी विद्वानों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई, उनमें अमेरिका के प्रख्यात जैन धर्मविद् डॉ. जॉन ई. कॉर्ट का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने जैन धर्म को केवल प्राचीन भारतीय दर्शन के रूप में नहीं, बल्कि आज भी जीवंत, गतिशील और समाज-निर्माण में सक्रिय आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा के रूप में विश्व के समक्ष प्रतिष्ठित किया।

सन् 1953 में संयुक्त राज्य अमेरिका में जन्मे डॉ. जॉन ई. कॉर्ट का प्रारंभिक जीवन पश्चिमी सांस्कृतिक परिवेश में बीता, किन्तु उच्च शिक्षा के दौरान उनकी रुचि भारतीय धर्मों और विशेष रूप से जैन धर्म की ओर विकसित हुई। उन्होंने 1974 में यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉन्सिन-मैडिसन से स्नातक तथा 1982 में वहीं से दक्षिण एशियाई अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात उन्होंने विश्वविख्यात हार्वर्ड विश्वविद्यालय से 1984 में ए.एम. तथा 1989 में धर्म अध्ययन विषय में पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की। यही वह काल था जब उनका झुकाव जैन दर्शन और भारतीय धार्मिक परंपराओं के गंभीर अध्ययन की ओर स्थायी रूप से हुआ।

पीएच.डी. के उपरांत डॉ. कॉर्ट अमेरिका के ओहायो राज्य स्थित डेनिसन विश्वविद्यालय में एशियाई एवं तुलनात्मक धर्म के प्राध्यापक नियुक्त हुए। वहाँ उन्होंने कई दशकों तक अध्यापन किया तथा धर्म विभाग के अध्यक्ष के रूप में भी सेवाएँ दीं। आज वे प्रोफेसर एमेरिटस के रूप में सम्मानित हैं। किंतु उनका वास्तविक परिचय एक ऐसे शोधकर्ता का है, जिसने विश्वविद्यालय की सीमाओं से बाहर निकलकर भारत की धरती पर जैन समाज के बीच रहकर उसके जीवन, संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं को समझने का प्रयास किया।

डॉ. कॉर्ट का शोध-पद्धति की दृष्टि से सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने केवल प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन पर निर्भर रहने के स्थान पर प्रत्यक्ष क्षेत्रीय अध्ययन (फील्डवर्क) को अपनाया। उन्होंने गुजरात के पाटन, अहमदाबाद, उत्तर गुजरात तथा राजस्थान के अनेक नगरों और गाँवों में वर्षों तक निवास किया। वे जैन श्रावक परिवारों के साथ रहे, उनके धार्मिक अनुष्ठानों, मंदिरों, चातुर्मास, साधु-साध्वियों के विहार और दैनिक धार्मिक जीवन का प्रत्यक्ष अध्ययन किया। इसी कारण उनके लेखन में जैन धर्म किसी संग्रहालय में सुरक्षित अतीत की वस्तु नहीं, बल्कि आज भी धड़कती हुई एक जीवंत संस्कृति के रूप में दिखाई देता है।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक पश्चिमी जगत में जैन धर्म को प्रायः केवल तपस्या, संयम और मोक्ष-केंद्रित दर्शन के रूप में देखा जाता था। डॉ. जॉन ई. कॉर्ट ने इस सीमित दृष्टिकोण को बदलने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने अपने शोधों के माध्यम से स्पष्ट किया कि जैन धर्म केवल संन्यासियों का धर्म नहीं है, बल्कि गृहस्थ जीवन में रहते हुए व्यापार, दान, सेवा, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करना भी जैन जीवन-दर्शन का अभिन्न अंग है। उन्होंने जैन समाज की आर्थिक संरचना, व्यापारी परंपरा, दान-संस्कृति, मंदिर व्यवस्था, सामाजिक संगठन तथा धार्मिक व्यवहार का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया।

सन् 2001 में प्रकाशित उनकी प्रसिद्ध पुस्तक Jains in The World : Religious Values and Ideology पद India आधुनिक जैन अध्ययन की सबसे प्रभावशाली कृतियों में गिनी जाती है। इस ग्रंथ में उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि जैन धर्म संसार का त्याग करने की शिक्षा अवश्य देता है, किन्तु वह गृहस्थ जीवन को भी धर्माचरण का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र मानता है। विशेष रूप से श्वेताम्बर जैन समाज के सामाजिक और धार्मिक जीवन का उन्होंने अत्यंत सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत किया, जिससे पश्चिमी विद्वानों के समक्ष जैन धर्म का एक नया और अधिक यथार्थ स्वरूप उद्घाटित हुआ।

उनकी दूसरी चर्चित कृति Framing the Jina : Narratives of Icons and Idols in Jain History (2010) जैन प्रतिमा-विज्ञान, मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला और भक्ति परंपरा पर एक असाधारण अध्ययन है। इस ग्रंथ में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि जैन प्रतिमा केवल कला का विषय नहीं, बल्कि साधक की आध्यात्मिक चेतना का केंद्र है। उन्होंने प्रतिमा-प्रतिष्ठा, पूजा-विधान, मंदिरों की सांस्कृतिक भूमिका और जैन भक्तिभाव का अत्यंत संवेदनशील विश्लेषण किया।

डॉ. कॉर्ट ने Open Boundaries : Jain Communities and Cultures in Indian History जैसी महत्त्वपूर्ण संपादित कृति तथा Brill's Encyclopedia of Jainism जैसे विश्वकोशीय प्रकाशनों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने जैन दर्शन, इतिहास, समाज, भक्ति, जातीय संरचना, तीर्थ, प्रतिमा-विज्ञान तथा भारतीय धार्मिक परंपराओं पर सौ से अधिक शोध-पत्र और पुस्तक अध्याय प्रकाशित किए हैं, जिन्हें आज विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों में प्रमाणिक संदर्भ सामग्री के रूप में पढ़ाया जाता है।

उनका एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान जैन भक्ति परंपरा के अध्ययन से जुड़ा है। लंबे समय तक पश्चिमी विद्वानों के बीच यह धारणा रही कि जैन धर्म केवल कठोर तप और वैराग्य का धर्म है, जिसमें भक्ति का स्थान सीमित है। डॉ. कॉर्ट ने इस भ्रम का वैज्ञानिक निराकरण किया। उन्होंने अपने शोधों में जैन स्तवन, पूजा-पद्धति, तीर्थयात्रा, मंदिर संस्कृति और भक्तिकाव्य का गहन अध्ययन कर यह सिद्ध किया कि जैन धर्म में भक्ति और दर्शन का अद्भुत समन्वय विद्यमान है। उनके लेखन में जैन धर्म की आध्यात्मिक संवेदना अत्यंत सजीव रूप में अभिव्यक्त होती है।

उनके उत्कृष्ट शोध-कार्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी व्यापक सम्मान प्राप्त हुआ। वर्ष 2017 में उन्हें प्रतिष्ठित जॉन साइमन गुगेनहाइम फेलोशिप से सम्मानित किया गया, जो विश्व के श्रेष्ठ शोधकर्ताओं को प्रदान किया जाने वाला एक अत्यंत प्रतिष्ठित सम्मान है। इस सम्मान ने जैन अध्ययन के क्षेत्र में उनके योगदान को वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रतिष्ठा प्रदान की। (शेष पृष्ठ 3 में)

श्री मरूधर केसरी गुरूभ्यो नमः

देवानुप्रिय सेठ सा श्री माणकचंद सा श्रीमती रूप लता जी बोहरा की पावन स्मृति में

नरेश - बबिता, हर्ष - साधना, सौ. कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन - मुम्बई - जोधपुर

HaloVerse Entertainment Pvt Limited. Mumbai

Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai

XL Energy Ltd.

जय गुरू रूप

जय गुरू मरूधर केसरी

जय गुरू सुकन

कोटिशः वंदन नमन

नरेश बोहरा जैन

राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

कार्याध्यक्ष - पावन धाम, जैतारण, राजस्थान

7666540600 Jainn07@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन समाज के ऐतिहासिक अल्प ज्ञात तथ्य श्रृंखला...

जैना भाई से जिन्ना तक : इतिहास, परंपरा और एक विवादित प्रश्न

-प्रो. डॉ. अमितराय जैन

भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में मोहम्मद अली जिन्ना का व्यक्तित्व जितना चर्चित है, उतना ही उनके पारिवारिक मूल को लेकर भी जिज्ञासा रही है। समय-समय पर जैन समाज के बहुत सारे विद्वानों और संतों के द्वारा यह दावा किया जाता रहा है कि जिन्ना के पूर्वज मूलतः गुजरात के व्यापारी समाज से थे और उनका संबंध जैन परंपरा अथवा जैन-प्रभावित लोहाणा समुदाय से था।

इसी संदर्भ में "जैना भाई से जिन्ना" बनने की कथा भी प्रचलित है। किंतु इतिहास की कसौटी पर इस विषय का मूल्यांकन अत्यंत सावधानी से किया जाना चाहिए।

प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार जिन्ना के पिता जिन्नाभाई पूंजा गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र के निवासी थे। उनका परिवार मूलतः लोहाणा व्यापारी समुदाय से संबंधित था, जिसने कई पीढ़ियों पहले खोजा मुस्लिम परंपरा को अपनाया था। कुछ शोधकर्ताओं का मत है कि "जिन्नाभाई" अथवा "जीणाभाई" नाम का संबंध 'जिन' शब्द से हो सकता है, जो जैन धर्म में तीर्थंकरों के लिए प्रयुक्त होता है। इसी आधार पर कुछ लोगों ने उनके पूर्वजों के जैन संबंध की संभावना व्यक्त की है, किंतु इसके समर्थन में कोई निर्विवाद ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।

इतिहास का अध्ययन हमें यह अवश्य बताता है कि मध्यकाल और औपनिवेशिक काल में गुजरात के अनेक व्यापारी परिवारों ने विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक कारणों से धर्म परिवर्तन किया। इसलिए किसी परिवार की सांस्कृतिक जड़ों और उसकी बाद की धार्मिक पहचान में अंतर होना असामान्य नहीं था। किंतु जिन्ना के परिवार को निश्चित रूप से जैन कहना इतिहाससम्मत नहीं माना जा सकता।

इस विषय का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यही है कि इतिहास और लोककथाओं के बीच स्पष्ट भेद बनाए रखा जाए। "जैना भाई से जिन्ना" की कहानी जनश्रुति का विषय हो सकती है, लेकिन शोधपरक लेखन का दायित्व तथ्यों और प्रमाणों पर आधारित निष्कर्ष प्रस्तुत करना है। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जिन्ना के पूर्वज गुजरात के व्यापारी समाज से जुड़े थे, जबकि उनके जैन मूल का प्रश्न आज भी इतिहासकारों के बीच शोध और विमर्श का विषय बना हुआ है। इतिहास का सम्मान तभी संभव है जब हम न तो अप्रमाणित दावों को तथ्य मानें और न ही शोध की संभावनाओं को अस्वीकार करें। यही दृष्टिकोण एक निष्पक्ष और प्रामाणिक इतिहास लेखन की आधारशिला है।

पिन कोड को अलविदा, डाक विभाग ने पेश किया DIGIPIN, अपना डिजिटल पता कैसे खोजें?

पिन कोड का युग, जो डाक पते का आकर्षण था, खत्म हो गया है और भारतीय डाक विभाग ने विकल्प के रूप में 'डिजीपिन' नामक एक डिजिटल पता पेश किया है। DIGIPIN अब से देश में नया एड्रेस सिस्टम होगा। जबकि पारंपरिक पिन कोड एक विस्तृत क्षेत्र को कवर करते हैं, 10-अंकीय डिजीपिन प्रणाली आपके घर या व्यवसाय के सटीक स्थान का प्रतिनिधित्व करती है। आइए जानते हैं पिन कोड और डिजीपिन में क्या अंतर हैं।

भारतीय डाक विभाग ने सटीक स्थान समझने के लिए DIGIPIN प्रणाली शुरू की है। DIGIPIN में 10 अंकों का डिजिटल कोड होता है। पारंपरिक पिन कोड के बजाय, जो एक विस्तृत क्षेत्र को कवर करता है, डिजीपिन सटीक स्थान की जानकारी प्रदान करेगा। यानी इस DigiPIN के जरिए आपके घर या बिजनेस की सटीक लोकेशन का पता लगाया जा सकता है. आप DIGIiPIN बनाने और कोड ढूंढने के लिए निर्दिष्ट सरकारी वेबसाइट पर जाकर अपना घर ढूंढ सकते हैं। DIGIPIN का लाभ यह है कि यह पत्राचार को सही जगह पर पहुंचाएगा और आपातकालीन सेवाओं जैसे एम्बुलेंस और अग्निशमन विभाग को स्थान को समझकर उस तक सटीक रूप से पहुँचने में मदद करेगा। उम्मीद है कि DIGIPIN ग्रामीण इलाकों समेत दूरदराज के इलाकों में भी फायदेमंद होगा।

दावा किया गया है कि DIGIPIN न केवल पत्राचार के लिए, बल्कि ई-कॉमर्स वेबसाइटों के लिए भी पार्सल को सही स्थान पर पहुँचाने में सक्षम होगा।

अपना डिजीपिन कैसे खोजें? : आपका DIGIPIN ढूंढने के लिए सरकारी वेबसाइट https://dac-indiapost.gov.in/mydigipin/home तैयार की गई है। इस वेबसाइट पर जाकर आपको जो लोकेशन मिली है उस पर क्लिक करके आप अपना 10 अंकों का डिजीपिन पता कर सकते हैं। डिजीपिन को अन्य एड्रेस सिस्टम से अलग बनाने वाली बात यह है कि आप चार मीटर के दायरे में अपना सटीक स्थान जान सकते हैं। इंडिया पोस्ट ने आईआईटी हैदराबाद, एनआरएससी और इसरो के सहयोग से डिजीपिन नामक एक जियोकोडेड डिजिटल एड्रेस सिस्टम विकसित किया है। डिजीपिन का उपयोग अहफलाइन भी किया जा सकता है।

सौजन्य : सम्पादकीय टीम

कविता का कोना

प्रतिकार

ईर्ष्यावश उन्होंने हमारे दुग्ध-पात्र में नीम्बू डाल दिया
हमने रसगुल्ले बना लिये।
छलवश उन्होंने हमारे स्वर्ण पात्र में विष उँडेल दिया
हमने औषध बना ली।
खीजकर उन्होंने हम पर काँटें उछाले
हमने उपवन के बाड़ लगा दी।
क्रोधवश उन्होंने हमको गालियाँ दीं
मगर हमने नहीं लीं।
अब वे हाथ मल मन मसोस कर बैठे हैं।

- डॉ. दिलीप धींग जैन, चेन्नई

धर्म का फर्ज निभाए जा

जहाँ जितना जो मिले, खुशी खुशी पाए जा!
धर्म की रक्षा के लिए, अपना फर्ज निभाए जा!!
भूल जा साधना का चमत्कार!
कलयुग की गिरफ्त में संसार!!
जैसा समय है उसी अनुरूप, रंग में रंगाए जा !
धर्म की रक्षा के लिए, अपना फर्ज निभाए जा!!
जो आदर्श परिपाटी पास है!
कभी ना डोलेगा विश्वास है!!
कोई तपे, न तपे तो क्या, 'समदर्शी' खुद को तपाए जा!
धर्म की रक्षा के लिए, अपना फर्ज निभाए जा!!

- ओम समदर्शी, कुरड़ायां-उदयपुर

कसौटी भले कठिन हो

उदय हो आरंभ हो, दृढ निर्णय अंतिम हो,
कर पूरा मंजिल को, चाहे रात हो या दिन हो,
दे प्रमाण निश्चय की धुन का, कसौटी भले कठिन हो।।
छोडना मत लक्ष्य की रफ्तार को,
पर छोड़ देना डर के किंचित भार को,
जैन कॉन्फ्रेंस नाम तेरा सृष्टि में प्रसिद्ध हो,
जिस प्रयोजन को खड़ा है, वो प्रयोजन सिद्ध हो।।
कुछ चला और कुछ है बाकी, विजय श्री प्रतिदिन हो,
दे प्रमाण निश्चय की धुन का, कसौटी भले कठिन हो।।
अवरोध से क्यू टूटता है, कुछ भी कर लो,
कुछ न कुछ तो छूटता है, हो सवधान,
तू कर निदान, कठिन है माना डगर,
पर सोच तू क्या झलक होगी,
विजय के उपलक्ष्य की, उठना, गिरना, फिर चलना,
दे प्रमाण निश्चय की धुन का, कसौटी भले कठिन हो ।।

- जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') जैन समाज के लिए यह आत्ममंथन का विशेष अवसर है। स्थानकवासी जैन परंपरा सहित समस्त जैन समाज मूलतः साधु-आधारित और साधु-प्रेरित समाज है। यही उसकी सबसे बड़ी शक्ति रही है। आज चातुर्मास प्रारंभ हो चुके हैं। देशभर में लगभग बीस हजार जैन साधु-साध्वियाँ वर्षावास के लिए एक-एक स्थान पर विराजमान हैं। करोड़ों श्रावक-श्राविकाएँ उनके सान्निध्य में धर्मश्रवण कर रही हैं। यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों का समय नहीं, बल्कि समाज-निर्माण का स्वर्णिम अवसर है।

इस वर्ष के चातुर्मास में केवल तप, जप, स्वाध्याय और प्रवचन तक सीमित न रहकर "संस्कार बचाओ-परिवार बचाओ" का राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया जाना चाहिए। प्रत्येक चातुर्मास समिति, प्रत्येक श्रीसंघ, प्रत्येक श्रावक-श्राविका और प्रत्येक साधु-साध्वी परिवारों में संवाद, विवाह-पूर्व परामर्श, वैवाहिक उत्तरदायित्व, नशामुक्ति, डिजिटल संयम, चरित्र निर्माण और जैन जीवन-मूल्यों पर विशेष प्रवचन एवं कार्यशालाएँ आयोजित करें। यदि समाज की मूल इकाई-परिवार-सुरक्षित रहेगी, तभी धर्म और संस्कृति भी सुरक्षित रहेंगे।

जैन दर्शन का मूल संदेश अहिंसा, संयम, सत्य, अपरिग्रह और आत्मानुशासन है। यदि ये मूल्य केवल मंदिरों तक सीमित रह जाएँ और परिवारों तक न पहुँचें, तो हमारा धार्मिक वैभव भी समाज को दिशा नहीं दे पाएगा। आज आवश्यकता प्रवचनों की संख्या बढ़ाने से अधिक उनके सामाजिक प्रभाव को बढ़ाने की है।

लोहगढ़ की घटना, मेरठ की घटना और ऐसे अनेक चर्चित प्रकरण हमें यही बताते हैं कि करोड़ों रुपये का विवाह, भव्य आयोजन, आधुनिक जीवन-शैली या ऊँची शिक्षा भी उस विवाह को नहीं बचा सकती, जिसकी नींव विश्वास, स्पष्ट सहमति, संवाद और नैतिक प्रतिबद्धता पर न हो।

आज आवश्यकता किसी एक लिंग, किसी एक पीढ़ी या किसी एक समुदाय को दोष देने की नहीं है। आवश्यकता है कि हम स्वयं से प्रश्न पूछें-क्या हम अपने बच्चों को केवल करियर दे रहे हैं या चरित्र भी? क्या हम उन्हें केवल सफलता का मंत्र सिखा रहे हैं या संबंधों का मूल्य भी? क्या हम आधुनिकता के साथ आत्मसंयम का संस्कार भी दे पा रहे हैं?

चातुर्मास का यह पावन काल केवल आत्मकल्याण का नहीं, समाज-कल्याण का भी महापर्व बने। यदि इस वर्ष प्रत्येक जैन साधु-साध्वी, प्रत्येक श्रीसंघ और प्रत्येक धार्मिक संस्था परिवार संस्था के संरक्षण, वैवाहिक जीवन में संवाद और युवा पीढ़ी के संस्कार निर्माण का संकल्प ले, तो यही लोहगढ़ जैसी घटनाओं के प्रति सबसे सार्थक श्रद्धांजलि होगी।

समय की पुकार स्पष्ट है-नारे नहीं, संस्कार चाहिए, अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व भी चाहिए, आधुनिकता चाहिए, पर अपनी सांस्कृतिक आत्मा के साथ। परिवार बचेगा तो समाज बचेगा, समाज बचेगा तो राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित रहेगा।

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

प्रवर्तक पू. श्री सुभद्रमुनि जी म. की शल्य चिकित्सा संपन्न

नई दिल्ली : राष्ट्रसंत आगम रत्नाकर उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री सुभद्रमुनि जी महाराज का कुछ समय से स्वास्थ्य अनुकूल नहीं था। समय स्थिति मर्यादित उपचार चल रहा था। ओजस्वी वक्ता श्री रमेश मुनि जी म. एवं अन्य संतों एवं श्रीसंघ, श्रावक-श्राविका, डॉक्टर विशेषज्ञ डॉ. नागेश जैन, डॉ. अंशुल जैन, डॉ. संजय जैन, डॉ. मोनिका जैन आदि डॉक्टरों से विचार-विमर्श के साथ निर्णय लिया गया। हृदय विशेषज्ञ शल्य चिकित्सक डॉ. युगल किशोर मिश्रा द्वारा उपचार सम्पन्न हुआ। चिकित्सा के उपरांत पूज्य गुरुदेव का स्वास्थ्य अनुकूल है। इस अवसर पर युग प्रधान आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज ने उत्तम स्वास्थ्य की मंगल भावना प्रस्तुत की। पूज्य उपाध्याय एवं गुरु भगवन्तों, प्रर्वतिनी एवं पूज्या महासाध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने जप-तप आराधना द्वारा, शुभ-भावनाओं के साथ स्वास्थ्य की मंगल कामना प्राप्त हुई।

भारत के 14वें राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी ने कहा आप ऋषि-मुनि है, शरीर की आधि-व्याधि आ जाती है, भगवान से प्रार्थना करते है आप शीघ्र स्वस्थ हो, आपका स्वास्थ्य उत्तम रहे। केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन मेघवाल एवं दिल्ली सरकार मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, भारत विकास परिषद् राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुरेश जैन आदि ने शुभ भावना व्यक्त की। - अमितमुनि जी म.

आनंद जयंती (13 अगस्त 2026) के शुभ अवसर पर विशेष ...

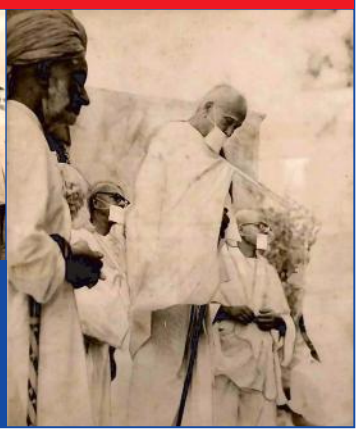

जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज का अपनी शिष्य मंडली के साथ 70 के दशक के दौरान पंजाब विचरण (उत्तर भारत यात्रा) के दो दुर्लभ चित्र!

सौजन्य : शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत

गुरु पूर्णिमा पर गुरुभक्ति का अनुपम समर्पण

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : गुरु केवल मार्ग नहीं बताते, वे स्वयं मार्ग बनकर जीवन को प्रकाशमय कर देते हैं। गुरु का सान्निध्य आत्मा को संयम, साधना और सम्यक्त्व की ओर अग्रसर करता है। गुरु के चरणों में समर्पित प्रत्येक भाव जीवन को सार्थक बना देता है। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर दुर्ग स्थित श्रमण संघ परिवार के सदस्यों ने अपने आराध्य राष्ट्रसंत मानव मिलन संस्थापक परम पूज्य गुरुदेव श्री मणिभद्र मुनि जी महाराज के चरणों में अद्भुत श्रद्धा और भक्ति का परिचय देते हुए 50 बेला एवं 5 तेला

तपस्या की भावपूर्ण भेंट अर्पित की। इस अवसर पर पूरा वातावरण गुरुभक्ति, साधना और आध्यात्मिक उल्लास से ओत-प्रोत रहा।

प्रेषक : नवीन संचेती जैन

मालव केसरी की 42वीं पुण्यतिथि पर श्री सौभाग्य तीर्थ में उमड़ा गुरुभक्तों का तांता

रतलाम (मध्य प्रदेश) : सागोद रोड स्थित श्री सौभाग्य तीर्थ में मालव केसरी, जैन सुधाकर, श्रमण संघ के मूर्धन्य सूत्रधार, पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्यमलजी म. की 42वीं पुण्यतिथि पर गुरुभक्तों का तांता लगा। पुण्य स्मृति दिवस जप, तप, त्याग-तपस्याओं के साथ मना। रत्नपुरी के रत्न, श्रमण संघीय प्रवर्तक पूज्य श्री प्रकाशमुनिजी म. 'निर्भय' सहित संत एवं महासती मंडल की पावन निश्रा में पहले

जाप और फिर विशाल गुणानुवाद सभा हुई। सभा में चातुर्मास समिति अध्यक्ष पारस वोरा, सचिव संदीप चोरड़िया, उपाध्यक्ष इंदरमल चोपड़ा, कोषाध्यक्ष मुकेश चोरड़िया, भंवरलाल पुंगलिया, श्री संघ के पूर्व अध्यक्ष, श्री सौभाग्य तीर्थ मार्गदर्शक सुरेंद्र कुमार गादिया, अध्यक्ष कन्हैयालाल गांधी, उपाध्यक्ष आजाद कुमार मेहता आदि सहित बडी संख्या में गुरुभक्तों के साथ पूर्व गृहमंत्री हिम्मत कोठारी और विभिन्न श्रीसंघो के प्रतिनिधिगण भी शामिल हुए। प्रेषक : संदीप चोरड़िया

जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्यों के लिये विशेष सूचना

जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त आजीवन सदस्यों को सूचनार्थ निवेदन है कि आप आपना नाम, पता, फोटो, मोबाईल नंबर, ई-मेल, आधार कार्ड आदि जानकारी नीचे दिए गए लिंक पर जाकर अपडेट कर सकते हैं। यह लिंक एकदम सुरक्षित है। - सम्पादकीय टीम

Link - https://jainconference.org/MemberRegistration.aspx

महासती श्री मोहनदेवी जी म. की स्मृति में स्थापित

भगवान महावीर सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, रोहिणी, दिल्ली का निर्माण कार्य प्रगति की ओर

महासती मोहन देवी जैन शिक्षण समिति द्वारा निर्माणाधीन भगवान महावीर सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, रोहिणी, दिल्ली केवल एक स्वास्थ्य परियोजना नहीं, बल्कि सेवा, संवेदना और मानव कल्याण के संकल्प का साकार स्वरूप है। यह उत्तर भारत में जैन समाज द्वारा निर्मित प्रथम एवं एकमात्र सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल है, जिसका उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर आर्थिक रूप से कमजोर, जरूरतमंद एवं वंचित लोगों को अत्याधुनिक, गुणवत्तापूर्ण एवं मानवीय चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध कराना है।

लगभग 3 लाख वर्गफुट क्षेत्रफल में निर्मित हो रहा यह अत्याधुनिक अस्पताल लगभग 300 बेड की सुविधा से सुसज्जित होगा। लगभग 500 करोड़ की लागत से विकसित की जा रही इस महत्वाकांक्षी परियोजना में आधुनिक चिकित्सा तकनीक, अनुभवी विशेषज्ञ चिकित्सकों, अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों तथा विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था की जा रही है।

समिति के महामंत्री श्री महेश जैन जी ने बताया कि इस भव्य स्वास्थ्य संस्थान के निर्माण को साकार रूप देने के लिए अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी एवं विशेषज्ञ दिन-रात पूर्ण समर्पण के साथ कार्य कर रहे हैं। लगभग 45 फीट गहराई तक निर्माण कार्य

सुरक्षित रूप से पूर्ण किया जा चुका है तथा अब तीसरे बेसमेंट फ्लोर (B-3 Floor) का निर्माण प्रारंभ हो गया है, जहाँ भविष्य में अत्याधुनिक कैंसर विभाग (ऑन्कोलॉजी सेंटर) स्थापित किया जाएगा।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में यह हॉस्पिटल न केवल दिल्ली और उत्तर भारत, बल्कि सम्पूर्ण देश में चिकित्सा सेवा का एक उत्कृष्ट एवं प्रेरणादायी केंद्र बनेगा तथा लाखों रोगियों एवं उनके परिवारों के जीवन में स्वास्थ्य, आशा और नई ऊर्जा का संचार करेगा। प्रेषक : सुभाष ओसवाल जैन

अहिल्यानगर में भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन

अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) : 26 जुलाई को परम पूज्य उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीणऋषि जी म., मधुर कंठी पू. श्री तीर्थेशऋषिजी म. एवं पूज्य साध्वीवृंद की मंगलमयी निश्रा में भव्य सजोड़े भक्तामर अनुष्ठान दिव्य आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुपम साक्षी बना। 7,000 से अधिक श्रद्धालुओं की भावपूर्ण उपस्थिति ने इस अनुष्ठान को अविस्मरणीय बना दिया।

यह केवल एक आयोजन नहीं था, बल्कि भक्ति, श्रद्धा, संस्कार, विनम्रता और गुरुभक्ति का विराट महोत्सव था, जिसने प्रत्येक हृदय को प्रभुभक्ति में सराबोर कर दिया। अनुष्ठान के लाभार्थी श्री अशोक (बाबूसेठ) बोरा जैन एवं बोरा परिवार रहे। श्रद्धालुओं की उपस्थिति ने इस दिव्य आयोजन को ऐतिहासिक बना दिया। प्रेषक : अशोक (बाबूसेठ) बोरा जैन

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR • TIRUVANNAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606 803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

पू. श्री त्रिलोक ऋषिजी म. की पुण्य स्मृति में युवाचार्यश्री ने किया गुणगान

भीलवाड़ा (राजस्थान) : कविकुलभूषण पूज्यपाद त्रिलोकऋषिजी महाराज का जीवन केवल साधना और संयम की यात्रा नहीं, बल्कि असाधारण पुरुषार्थ, अद्वितीय प्रतिभा, आगम-ज्ञान, साहित्य-सृजन और जिनशासन के प्रति समर्पित जीवन की ऐसी प्रेरणादायी गाथा है, जिसने आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञान और साधना की सुदृढ़ परंपरा निर्मित की। उनके पुण्य स्मृति दिवस पर शांतिभवन मे आयोजित धर्मसभा में श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का स्मरण करते हुए कहा कि कुछ महापुरुष अपने जीवन से ऐसे कार्य कर जाते हैं, जिन्हें सामान्य दृष्टि से असंभव-सा माना जाता है, त्रिलोक ऋषिजी का संपूर्ण जीवन ऐसे ही अद्भुत पुरुषार्थ का साक्षी है।

उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र की यात्रा के दौरान उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कहीं जल उपलब्ध नहीं होता तो कहीं भोजन की व्यवस्था नहीं होती। किंतु जिनशासन के प्रति अटूट निष्ठा और धर्मप्रसार के संकल्प ने उनके कदमों को कभी विचलित नहीं होने दिया। लगभग साढ़े तीन वर्ष के अल्प प्रवास में उनके मुखारविंद से 22 दीक्षाएं हुई। धर्मसभा में बेंगलुरु, चेन्नई, मालेगांव, यशवंतपुर, उदयपुर, पाली, चित्तौड़गढ़ सहित विभिन्न क्षेत्रों से पधारे अतिथियों के साथ शहर एवं उपनगरों के श्रद्धालु उपस्थित रहे।

प्रेषक : सुनील चपलोत

भारतीय संस्कृति का निर्माण ऋषि मुनियों के आध्यात्मिक ज्ञान के सहारे हुआ

मैसूर (कर्नाटक) : स्थानकवासी जैन संघ हल्लदकेरी के तत्वावधान में स्थानक भवन में अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच नई दिल्ली महिला शाखा कार्यकारिणी के अधिवेशन को संबोधित करते हुए पू. श्री कमलमुनि जी म. 'कमलेश' ने कहा कि भोगवाद की पश्चात संस्कृत में डूब कर आध्यात्मिकता की दुहाई देना धर्म गुरु और भगवान के साथ अन्याय करने के समान है। हम महापुरुषों की जयकार तो करते हैं, परंतु उनके सिद्धांतों के साथ सौतेला व्यवहार करते हैं। दैनिक जीवन के आचार, विचार और व्यवहार में भी भारतीय संस्कृति दर्शन दुर्लभ होते जा रहे हैं। ऐसी आत्मा का धार्मिकता में प्रवेश कदापि संभव नहीं है। भारतीय संस्कृति का निर्माण ऋषि मुनियों के आध्यात्मिक ज्ञान के सहारे हुआ है, जिसका लोहा आज का विज्ञान भी मान रहा है। सभा का संचालन आशादेवी वीरवाल ने किया।

प्रेषक : बुधमल बाघमार जैन

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा कोप्पल गौशाला में गायों के लिए दो शेड निर्माण हेतु सहयोग

बैंगलुरु (कर्नाटक) : दिनांक 8 अगस्त को श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक प्रांत के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों तथा महिला, युवा एवं विहार समिति के 200 से अधिक सदस्यों ने बैंगलुरु के वी. वी. पुरम स्थित महावीर धर्मशाला में चातुर्मासार्थ विराजित आगमज्ञाता, प्रज्ञा महर्षि एवं वाणी के जादूगर डॉ. समकितमुनि जी म.आदि ठाणा के दर्शन-वंदन एवं प्रवचन का लाभ लिया। जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक प्रांत द्वारा कोप्पल गौशाला में जीवदया के अंतर्गत गायों के लिए दो शेड निर्माण हेतु राशि प्रदान की गई। जीवदया, सेवा एवं समाजोपयोगी कार्यों को आगे बढ़ाना जैन कॉन्फ्रेंस की प्रमुख प्राथमिकताओं में है।

कार्यक्रम में कर्नाटक प्रांतीय अध्यक्ष श्री प्रकाश बुरड़ जैन, प्रांतीय महामंत्री श्री नेमीचन्द दलाल जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुरेश छल्लानी, गौतम धारीवाल, राष्ट्रीय मार्गदर्शिका आरती बुरड़ जैन, संगीता छल्लानी, प्रांतीय मार्गदर्शक शांतिलाल पोखरणा, पन्नालाल कोठारी, प्रांतीय उपाध्यक्ष जसवन्त गन्ना, गुलाब पगारिया, हस्तीमल बाफना, महावीर धारीवाल, अनिल कोठारी, किशोर दलाल, मंत्री विकास कोठारी, राजेश गुलेच्छा, भरत कोठारी, हिमांशु चौधरी, सुरेश नवेदिया, प्रवीण सिंघी, प्रचार-प्रसार मंत्री सागर बाफना, अनिल बाफना, राकेश संचेती, शंकर दक, पुखराज बाफना, महेन्द्र संचेती, अनिल गन्ना, शीतल लुणावत सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

प्रेषक : नेमीचन्द दलाल जैन

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

सांसारिक फोटो

समाधि साधक पूज्य श्री हीरामुनि जी म. के उपवास के 76वें दिन संथारा सहित पंडित मरण

चेन्नई (तमिलनाडु) : दिनांक 30 जुलाई को 76वें उपवास के दिन पूज्य श्री हीरामुनि जी म. का संथारा (संलेखना) सिद्ध हुआ।

सांसारिक जीवन में श्री हीरालाल जी बाफना के रूप में विख्यात पूज्यवर ने जीवन के अंतिम चरण में भी अद्भुत जागरूकता और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। हजारों की जनमेदनी आपकी अंतिम यात्रा में सम्मिलित रही।

मध्य प्रदेश सरकार में पूर्व मंत्री पारस जैन का संथारा सहित देवलोकगमन

उज्जैन (मध्य प्रदेश) : मध्य प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री, उज्जैन उत्तर से छह बार विधायक के रूप में उल्लेखनीय सेवाएं देने वाले तथा जैन समाज के गौरव श्री पारस जैन का 3 अगस्त को 77 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने जैन परंपरा के अनुसार जीवन के अंतिम चरण में संथारा (संलेखना) ग्रहण कर शांत एवं समभावपूर्वक देह का त्याग किया। अपनी अंतिम इच्छा के अनुरूप उन्होंने नेत्रदान कर मानवता के प्रति प्रेरणादायी संदेश भी दिया। श्री पारस जैन का सार्वजनिक जीवन सादगी, जनसेवा और धार्मिक निष्ठा का उत्कृष्ट उदाहरण रहा। वे जैन समाज के गौरवशाली व्यक्तित्व थे और धर्म तथा समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सदैव स्मरणीय रहेगी। जैन कॉन्फ्रेंस का राष्ट्रव्यापी परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्री धर्मीचन्द कोठारी जैन का देवलोकगमन

हैदराबाद (तेलंगाना) : श्रीमान् धर्मीचंद कोठारी जैन सुपुत्र स्व. श्री जीवराज कोठारी जैन तथा तेलंगाना जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष समाजसेवी श्री स्वरूपचंद कोठारी जैन के भ्राता-हैदराबाद मरूधर मे पीह का 30 जुलाई को देहावसान हो गया। आप अत्यंत सहज सरल मृदुभाषी धार्मिक व्यक्ति थे तथा अनेकों संगठनों से जुड़े हुए थे।

श्रीमती सुषमा कांतिलाल बाफना जैन की संथारा व्रत पूर्णाहुति

घोडनदी (महाराष्ट्र) : घोडनदी की भूतपूर्व नगरसेविका एवं जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल के सदस्य श्री सुनील कांतिलाल जी बाफना जैन की पूज्य माताजी श्रीमती सुषमा कांतिलाल बाफना जैन (उम्र 81) ने दिनांक 02 अगस्त को उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीणऋषिजी म. के मुखारविंद से उपवास के पच्छखान तथा पू. श्री आभाश्रीजी म. के मुखारविंद से सजग अवस्था में सागारी संथारा व्रत के पच्छखान ग्रहण किये तथा उनके सागारी संथारा व्रत की पूर्णाहुति रात्रि 10 बजे हुई।

श्रीमती पारसकंवर बागमार जैन का संथारा सहित पंडित मरण

चेन्नई (तमिलनाडु) : दिनांक 23 जुलाई को धर्म परायणा श्रीमती पारस कंवर बाघमार जैन धर्मपत्नी स्व. श्री जबरचंद बाघमार जैन का संथारा सहित पंडित मरण हो गया।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

उधना की पुण्य धरा पर 536 आयंबिल तप आराधनाओं के साथ रचा गया धर्म इतिहास

उधना (गुजरात) : दिनांक 07 अगस्त को उधना श्रीसंघ के वर्षावास 2026 के अंतर्गत मालव केसरी परम पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्यजी म.सा. की 42वीं पुण्यतिथि के पावन अवसर पर आयोजित विशेष आयंबिल तप महोत्सव श्रद्धा, तप, त्याग एवं गुरुभक्ति का अनुपम उदाहरण बनकर उभरा। परम पूज्य साध्वी श्री चेतनाश्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री महिमाश्री जी म. के पावन आशीर्वाद एवं प्रेरणा से 536 आयंबिल तप आराधनाएँ सम्पन्न हुई। यह आयोजन सम्पूर्ण श्री संघ की सामूहिक श्रद्धा, संगठन शक्ति एवं गुरुभक्ति का जीवंत प्रमाण है।

प्रेषक : जैन श्रावक संघ, उधना (मेवाड़)

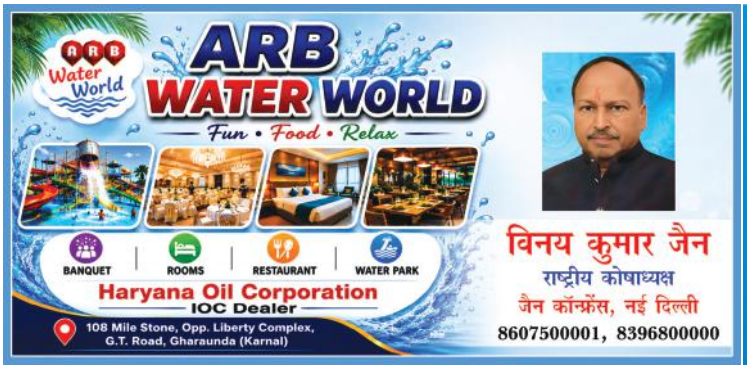

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 08-08-2026
Date of Posting : 14/15-08-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 22 ✲ पृष्ठ : 8
माह : अगस्त ✲ सप्ताह : 08 अगस्त से 14 अगस्त

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

राजा बहादुर लाला सुखदेव सहाय जैन : धर्म, ज्ञान और समाज-सेवा के युगद्रष्टा संरक्षक!

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

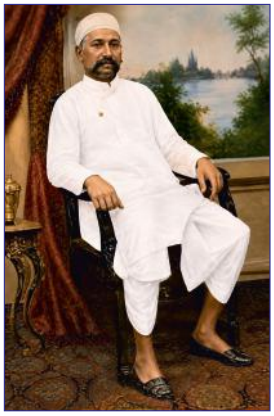

स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में कुछ ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से केवल अपना जीवन नहीं संवारा, बल्कि धर्म, साहित्य, शिक्षा और समाज-संगठन की ऐसी आधारभूमि निर्मित की, जिस पर आने वाली पीढ़ियों ने अपनी यात्रा आगे बढ़ाई। राजा बहादुर लाला सुखदेव सहाय जैन उन्हीं युगनिर्माता विभूतियों में अग्रगण्य थे। वे वैभवशाली व्यापारी, प्रतिष्ठित बैंकर और महान दानवीर होने के साथ-साथ स्थानकवासी जैन धर्म, जैन आगम-साहित्य और श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के अप्रतिम संरक्षक थे।

अग्रवाल वंश से स्थानकवासी जैन परंपरा तक : लाला सुखदेव सहाय जी का परिवार मूलतः अग्रवाल वंश का स्थानकवासी जैन श्रावक परिवार था। उनके पूज्य दादाजी लाला नेतराम जी जैन महेंद्रगढ़, हरियाणा में प्रतिष्ठित श्रावक के रूप में निवास करते थे। उनके पुत्र लाला रामनारायण जी जैन व्यापार के सिलसिले में हैदराबाद पहुँचे और वहीं विक्रम संवत् 1920 (1863-64 ई.) में लाला सुखदेव सहाय जी का जन्म हुआ, जो आगे चलकर स्थानकवासी जैन समाज के अत्यंत प्रभावशाली श्रावक के रूप में विख्यात हुए।

इस परिवार का स्थानकवासी जैन परंपरा में प्रवेश मनोहरदास जी महाराज की परंपरा के संतों के उपदेश एवं प्रेरणा से हुआ था। कालांतर में इसी आध्यात्मिक परंपरा में आचार्य श्री मंगल सेन जी महाराज, आचार्य श्री मोतीलाल जी महाराज, आचार्य श्री पृथ्वीचंद जी महाराज आदि महान संतों की परंपरा विकसित हुई, जिसके प्रति लाला सुखदेव सहाय जी एवं परिवार जीवनपर्यंत श्रद्धावनत रहे।

स्थानकवासी जैन समाज के सर्वोच्च संगठन श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस से उनका निकट संबंध भी इसी धार्मिक-सामाजिक चेतना की परिणति था। विशेष रूप से रायबहादुर सेठ लाला न्यादरमल जैन रईस, बिनौली मेरठ-जो उनके पारिवारिक मित्र तथा मनोहर संप्रदाय के वरिष्ठ श्रावक थे-के माध्यम से वे जैन कॉन्फ्रेंस से सक्रिय रूप से जुड़े और शीघ्र ही उसके प्रमुख संरक्षकों में प्रतिष्ठित हुए।

हैदराबाद के प्रतिष्ठित बैंकर और निजाम दरबार में सम्मान : लाला सुखदेव सहाय जी ने अपने पुरुषार्थ से हैदराबाद में एक अत्यंत प्रतिष्ठित व्यापारिक एवं बैंकिंग साम्राज्य स्थापित किया। उनका व्यापार हैदराबाद से निकलकर दिल्ली, कलकत्ता तथा देश के अनेक प्रमुख नगरों तक विस्तृत था और विदेशों तक भी उनके व्यापारिक संबंध थे। विभिन्न नगरों में उनकी व्यापारिक कोठियाँ थीं। हैदराबाद के निजाम के दरबार में उनका विशेष सम्मान था और निजाम सरकार ने विक्रम संवत् 1970 (1913-14 ई.) में उन्हें 'राजा साहब' की उपाधि से विभूषित किया।

निजाम सरकार के साथ उनकी आत्मीयता और प्रतिष्ठा का एक विलक्षण उदाहरण यह है कि उनके पुत्र लाला ज्वाला प्रसाद जी के जन्म के अवसर पर निजाम सरकार ने उनके निजी व्यय के लिए 100 रुपये मासिक देने की घोषणा की थी। यह उस समय उनके सामाजिक एवं राजकीय प्रभाव का असाधारण प्रमाण था।

किन्तु राजकीय सम्मान और अपार आर्थिक वैभव के बावजूद उनका जीवन मूलतः धर्म, सेवा और परोपकार के लिए समर्पित रहा।

आचार्य अमोलकऋषि जी और आगम-प्रकाशन का महायज्ञ : विक्रम संवत् 1964 (1907–08 ई.) में जब आचार्य श्री अमोलकऋषि जी महाराज हैदराबाद पधारे, तब लाला सुखदेव सहाय जी उनके सान्निध्य से अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने आचार्यश्री की अनेक पुस्तकों का प्रकाशन अपने व्यय से कराया तथा उस समय हुई तीन दीक्षाओं का संपूर्ण व्यय भी वहन किया। लेकिन उनके जीवन का सर्वाधिक ऐतिहासिक कार्य था-स्थानकवासी जैन परंपरा के मान्य बत्तीस आगमों का हिंदी अनुवाद सहित प्रकाशन।

उस समय देश में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का आंदोलन चल रहा था और महात्मा गांधी भी हिंदी को जन-जन की भाषा बनाने के प्रबल समर्थक थे। ऐसे समय में प्राकृत भाषा में निबद्ध जैन आगमों को हिंदी में उपलब्ध कराना वस्तुतः जैन ज्ञान को विशाल हिंदीभाषी समाज तक पहुँचाने का युगांतरकारी प्रयास था।

आचार्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज द्वारा किए गए आगमों के हिंदी अनुवाद को प्रकाशित कराने की प्रेरणा मनोहर संप्रदाय के संतों से प्राप्त हुई। लाला सुखदेव सहाय जी के परम मित्र एवं निकटवर्ती बिनौली-मेरठ निवासी लाला नि न्यादरमल जैन रईस की मध्यस्थता से यह महान कार्य उनके हाथों में आया। दोनों ही मनोहर संप्रदाय के वरिष्ठ श्रावक थे। लाला सुखदेव सहाय जी ने इस दायित्व को स्वीकार करते हुए उस समय लगभग 42,000 रुपये की विशाल राशि व्यय कर बत्तीसों आगमों का हिंदी अनुवाद सहित प्रकाशन कराया। जैन समाज में हिंदी भाषा में आगमों के इस प्रकार के प्रथम व्यापक प्रकाशन का श्रेय उन्हें प्राप्त हुआ।

यह केवल ग्रंथ छपवाने का कार्य नहीं था। इन अमूल्य आगमों को लकड़ी की पेटियों में सुरक्षित रखकर देश के विभिन्न जैन स्थानकों और उपाश्रयों तक पहुँचाया गया। जैन कॉन्फ्रेंस के कार्यकर्ताओं और उनके कर्मचारियों ने अनेक स्थानों पर साइकिलों से तथा पैदल चलकर, सिर पर पेटियाँ उठाकर, इन्हें श्रद्धापूर्वक जैन समाज तक पहुँचाया। इस प्रकार लाला सुखदेव सहाय जी ने धन को ज्ञान में और ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने वाले धर्मयज्ञ में परिवर्तित कर दिया।

जैन कॉन्फ्रेंस के महान संरक्षक : विक्रम संवत् 1970 (1913-14 ई.) में सिकंदराबाद में आयोजित श्री ऑल इंडिया स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पाँचवें अधिवेशन का संपूर्ण व्यय लाला सुखदेव सहाय जी और उनके पुत्र लाला ज्वाला प्रसाद जी ने वहन किया। उसी अवसर पर उन्होंने 7,000 रुपये जीवदया कोष के लिए जैन कॉन्फ्रेंस को प्रदान किए। इसके अतिरिक्त लगभग 5,000 रुपये की लागत से 'सुखदेव सहाय जैन प्रिंटिंग प्रेस' स्थापित कर उसे जैन आगम एवं साहित्य के प्रकाशन के लिए जैन कॉन्फ्रेंस को समर्पित किया।

उस समय यह अत्याधुनिक प्रेस मानी जाती थी। इसी प्रेस से शतावधानी पू. श्री रतनचंद जी महाराज द्वारा संकलित 'अर्धमागधी कोश' का ऐतिहासिक प्रकाशन हुआ, जिसे जैन साहित्य के इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है। बाद में इस प्रेस को इंदौर ले जाकर भी संचालित किया गया।

जैनेंद्र गुरुकुल पंचकूला-शिक्षा के तीर्थ के निर्माता : लाला सुखदेव सहाय जी की दानशीलता का एक और अमर स्मारक जैनेंद्र गुरुकुल, पंचकूला है। पंचकूला के निकट स्थापित इस गुरुकुल के लिए उन्होंने विशाल भूमि अपने संसाधनों से क्रय करके दान में दी। गुरुकुल के मुख्य भवन, भव्य प्रवेश-द्वार तथा अन्य प्रमुख निर्माण कार्यों का व्यय भी उन्होंने स्वयं वहन किया। उनके संरक्षण से यह संस्थान आगे चलकर स्थानकवासी जैन समाज का एक प्रमुख शैक्षिक एवं संस्कार-केंद्र बना।

इस प्रकार राजा बहादुर लाला सुखदेव सहाय जैन का जीवन धन-संचय की नहीं, धन के सदुपयोग की कथा है। उन्होंने व्यापार से अर्जित संपदा को धर्म, आगम, शिक्षा, जीवदया, साहित्य और समाज-संगठन के लिए समर्पित कर दिया।

उनकी सबसे बड़ी विरासत उनके द्वारा बनवाए भवन अथवा दिए गए दान नहीं, बल्कि वह ज्ञान-ज्योति है, जिसे उन्होंने हिंदी में जैन आगमों के प्रकाशन के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। इसलिए स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में उनका नाम एक ऐसे युगद्रष्टा दानवीर, आगम-प्रकाशन के पुरोधा और जैन कॉन्फ्रेंस के अमर संरक्षक के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

(शहजाद राय शोध संस्थान बड़ौत में संग्रहित दुर्लभ दस्तावेजों के आधार पर)

जैन गौरव

जैन मांगलिक चिन्ह स्वास्तिक

दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व जैन सम्राट खारवेल के अभिलेख में स्वास्तिक चिन्ह अंकित है। स्वातिक को जैन प्राचीन साहित्य में वर्णित अष्ट मंगलों में से एक मंगल चिन्ह माना गया है। इतिहास की दृष्टि से तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्ति पर बने सात फनों में से एक पर स्वास्तिक अंकित है, स्वास्तिक सौभाग्य का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में मांगलिक कार्यों में प्रत्येक कार्य की शुरुआत में यह चिन्ह बनाया जाता है तथा इसे कल्याण का प्रतीक माना जाता है। यह चिन्ह अनन्त शक्ति, सौन्दर्य, चेतना, सुख, समृद्धि परम सुख का प्रतीक है। जर्मनी की वायुसेना का यही चिन्ह है, इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता की होटल रामायण में भी यही चिन्ह अंकित है।

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906